



रत्न मकराङ्गुतमा श्री धर्मसत्वाये वि

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

DH 194

उत्तमाङ्गी वज्रतर्पिरूपक लोकि कपि उच्चा नगाथ

लोकि कपि लोकि कपि

उत्तमः श्री वज्रतर्पिरूपक लोकि कपि उच्चा नगाथ
लायाडा पानवा सने स्वस्तिक वाय विवलयान पलवाय मुकः
याग विवादा गुणमोनाया न स्वस्तिक पिबुथयु मया आसन स्वस्तिक
कवा संखडा स लेख सादुद धड धलकस्ति मय नय जडा
स पूजार् धडवा रूपादि नयाडा नावाय क पजार् आपयक
मुमुसुलदनक भूनकाड पिबुलडा झागक कवा हासुसा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

इदं धूलकस्ति धुडकडा लंखन संसृजक ल्ययाय थनयानः
क्रायक जुगया वानशयक नयक कडावि संकियक वायक ॥
उंख (६) २ खाहा ॥ उं हि नं २ खाहा ॥ ॥ थन उडा कनया गुवं ३
खदयक वाकि सकलं पिलुदयक धूलकस्ति नवसं गय
जामसयाला कू १ विष्णु प्रानं नयक वेखसजक तोयगवडा
आखग्यडा नयक थनयल हलस खानखालडा वायक पं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

वायहावपूजा थनवेखयल हलस खायनायाय वेखधि
यकं न मनुवा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय वनपुणकं गुवाजा
थखादि x ॥ ॥ थनवेख मक लामाजा विधि थपूजाया
वक ॥ धुसंलि कडा पुरिका हासु वि सं जुयकाय वायक ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय विष्णु धनवाजाय
यं न भगवाण्णवैवाधिसंखेखादि x ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सूखावती, लांकव्व, स्थायनायातक ॥ विधिर्ह्यपुत्रा ॥ ॥
धनक गहासुविमं, अय, वाक्यासं, साक्रीधनक, कृष्णपू २
नियुक्तयक, जयसुगयक पू २, असनयातक पू २ नियु ॥ ५
धनलि कृष्णलक लायक ॥ अयकासु, वाक्य ॥ ॥ उ नभारि
गवगसुर्वदुर्गतिपवि, धननाजाय ॥ यथातकधगगायौ,
पूर्ववाधिसुत्वेवर्थाविरिर्वाधिसुत्वा रुगवद्विर्मातापिरुपूव

गमलः सफपूवपलः सफनिर्वेल्ययूष्मतासिधनयत्का
म्यपलगतुल, दिवंगनयूष्मतापिनामकनामधयायप्र
नगगार्थलः वषडा वरुलियिं डयाधनार्थ, कृष्णसर्न, सुपु
आमिभूनिर्घागाजुयत्काध ॥ यथातकधगगायपूर्ववाः
धिसुत्वेवर्थाविरिर्वाधिसुत्वा रुगवद्विर्मातापिरुपूवः
गमलः सफपूवपलः सफनिर्वेल्ययूष्मतासिधनयत्का

कृष्णसनमुपनिषिर्ता॥ तंमवाक्यनयशासनं संप्रख्यामिः
लभधः॥ ३ त्रुतिरुनवाथेपनिप्रदलभधः॥ लयसल
खनरायक॥ उवसुधत्रिपिठुयानयह॥ लाहागनअधिष्ठा
नयानक॥ गताआकाशसर्वदवगादिहिरुगवंगुधवीनिनः
कर्वकुदेवानागमसुनोसुनोयन्नागन्धवीयामुहोवगमरुना
धुतापिभावादीः सर्वनागलपूजयन्॥ सर्वपूजाप्रपूजः

नैवद्वानागुयवसुनोऽज्ञावृक्षरसाधुवृक्षकृष्णरुमःसर्व
दुर्जनियात्रिसंस्तध्वैसखानेवाधिप्रायः॥ नवकीधुनानि
यन्त्रमदकदीर्घायुषानेवामृथादृक्वृक्षकानावसुगानि
प्रायः॥ ४ ॥ अन्धानानूगतासर्वधम्मापुनस्तानूयुगास
विष्ठासर्वधम्माअलकानूपविष्ठासर्वधम्माउवजवधवी
उंसर्वविष्ठावधवी३॥ उद्वरवजद्वेदामरुवगमसुनिमरुः

अंगुली उहानिकावाक ३

वृद्धदयं मरुव अविष्टिगु सर्वसिद्धिमप्रयच्छुं ह ३ हाः ॥
गवनतिष्ठवजसमयत्वं वजाव हा अः ऊहं व हाः ॥
थनपि शुग्वजाओं न कौवोक् ॥ यथा गतथा गणा पूर्ववाधिम
वचय्याविरतिः वृद्धीरुगवदिर्मातापि न पूर्वगं मेखः सफ
पुन्रसत्यः सफनी ध्यत्येः युष्मता विधाने स्फाव्यपलनेः
विद्यादिवंगत युष्मपिता जे मु कना म धा या यः पुनगणा

थेत्यः तस्यावकसां व कलिकपि लुं सं द्यता लो धका सर्वना समाः
सातामोसा साका हा दधयः सर्वो यकन तसहिता सर्वकु सिगव
किं न यदि य न तय स्या मिसु पृष्य धूप दीप गंधने यथादि स
युका दिवंगत युष्मपिता जे मु कना म धा या यः वृष्य सीवपीले
कपि लुं सं द्यता मिसो खा वर्या लो क धा तु म नू ग कृ नु लो धा ह
॥ ॥ ज्ञा या ज्ञा ज्ञा न या ज्ञा ज्ञा ज्ञा ज्ञा ध मि त नि ग्व ३ पि

रात्रां च कामिना स्थाह ॥ लंख ॥ उं सर्वविद्वज्जगत्सुधा ॥ गी
 धा ॥ उं सर्वविद्वज्जगत्सुधा ॥ सिद्धा ॥ उं सर्वविद्वज्जगत्सुधा ॥
 ख स्याह ॥ उं सर्वविद्वज्जगत्सुधा ॥ वसुधा ॥ उं सर्वविद्वज्जगत्सुधा ॥
 दानया ॥ वसिनायका भक्तसमुद्रस्य वनसमयस्य धा ॥ उं सर्वविद्वज्जगत्सुधा ॥
 लवमहावाधा ॥ लवधी ॥ लवया वसिनायका भक्तसमुद्रस्य वनसमयस्य धा ॥
 लवमहावाधा ॥ लवधी ॥ लवया वसिनायका भक्तसमुद्रस्य वनसमयस्य धा ॥

तायूजा भक्तसमुद्रस्य वनसमयस्य धा ॥ उं सर्वविद्वज्जगत्सुधा ॥
 लवमहावाधा ॥ लवधी ॥ लवया वसिनायका भक्तसमुद्रस्य वनसमयस्य धा ॥
 लवमहावाधा ॥ लवधी ॥ लवया वसिनायका भक्तसमुद्रस्य वनसमयस्य धा ॥
 लवमहावाधा ॥ लवधी ॥ लवया वसिनायका भक्तसमुद्रस्य वनसमयस्य धा ॥
 लवमहावाधा ॥ लवधी ॥ लवया वसिनायका भक्तसमुद्रस्य वनसमयस्य धा ॥
 लवमहावाधा ॥ लवधी ॥ लवया वसिनायका भक्तसमुद्रस्य वनसमयस्य धा ॥
 लवमहावाधा ॥ लवधी ॥ लवया वसिनायका भक्तसमुद्रस्य वनसमयस्य धा ॥
 लवमहावाधा ॥ लवधी ॥ लवया वसिनायका भक्तसमुद्रस्य वनसमयस्य धा ॥

पुस्तक ॥ ३

धउवा ३

जा मघ सुमुडरु नद समय हं ॥ उं सर्व विद्या लोक ये ज्ञा दिया
वमिगायुजा मघ सुमुडरु नद समय हं ॥ उं मुन २ मेहा मुनः
स्वाहा ॥ स्वां कय ॥ उं सर्व विद्वज न वाय स्वधा ॥ नि यय ॥ उं सर्व वि
द्वि विरु लाय स्वधा ॥ उं सर्व विरु लूषय स्वधा ॥ उं सर्व विद्वजः
कैर्क टिरु लाय स्वधा ॥ उं सर्व विद्व हर्न रुलाय स्वधा ॥ उं सर्व वि
द्वि विरु लाय स्वधा ॥ उं सर्व विद्वज मूलाय स्वधा ॥ उं सर्व वि

द्वजय विद्याय स्वधा ॥ उं सर्व विद्वज गां व वाय स्वधा ॥ सिसारुल
॥ समय धवा धू मरु ॥ यध म्मा अकात्र मुख दकृष्ण कियुव
॥ धन हान पि लु जान क अय वाय यो स मूल पि लु धय क पू
जाया यजा पाया थं ॥ धूसलि विक्रय पि लु धय क ॥ वी अय वा
॥ यं धी नं नं थ ग नाया य वं वी धि सख र्य्या वर हि वृ धारु ग
वरि मी नायु रु य वं ग म लः सफ पू य वः सफ नी धा लाय

अथ विधाय दत्तकालयत्नवत्तदिवंगतयुष्मपितामहमुक
 नामध्यायः वर्षसावकुलिकपिठुसंघनासाधकास
 वनासमासासामासासाकाशद्वयः सर्वोपकनसहिना १०
 सर्वकृतिगवर्जितयद्विद्यमनस्यसामि सयुष्मधूपदीपगंध
 नेवयादिसंयुक्तादिवंगतजमुकनामध्यायः वर्षसावकु
 विकपिठुयवासासकलजानाज्युषाथववाश्ववाः आत्मराविः

नृपावहनकालकलसमर्पकसोदहननिष्पुनियानाग
 शोभाति संस्कारहीनो विकनपिठुमाद्यसंसाधनाय वि
 कनपिठुसंघनामि साधकः ॥ द्रुपायाथ वाक् तानः
 पूजा ॥ इतिनादक आवमनं प्रणिगुरु ॥ इतिमाराग
 वनसर्वदुर्मेतिविहाराधनवाजायनमगकाशरुक्
 समस्तवृथायकथय ॥ इति साधनं २ विहाराधनं २ सर्वया



五

卷之五

५३७१

सिद्धा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

केल १/२५

६५५

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

पञ्च

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

३५५

विषय

१५५५

नोदक नोदक

10

1710 4 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100



पवित्राधनमुच्चैरिमुच्चैर्विवंगतः। अमृकनामध्यायाय, उंसर्व
कर्मविवनवित्राधनस्याहा॥ लंख॥ उंकैकनिश्वायनिश्
वायनिश्प्रतिहन्, रुव२ सर्वकर्मविवननिश्वायनिश्
स्याहा॥ साइइ, इइ॥ उंजुमायाप्रतिहन्, ह्य२ सर्वविवनविना
प्रतिहन्२ रुंरुट्स्याहा॥ ध५॥ उंवाधिसत्यपीनस्यस्याहा॥
रुमकलि॥ उंनमाहगवगंजुमृगकंदुनाजायस्यादि॥ ध॥३

ॐ मू २ म हा य धा द्यादि ॥ लं ख । गं धा दकः ॥ ॐ सर्वविद्वज्जुगं
 धस्य धा ॥ वं न ॥ ॐ सर्वविद्वज्जतिवक रुष नं स्व धा ॥ सि धा ॥ ॐ स
 र्वविद्वज्जमु स्व स्व धा ॥ वं नाला हा न ॥ ॐ सर्वविद्वज्जु ह्य वि ना
 य स्व धा ॥ ऊ ऊ म ॥ ॐ मू नं २ म हा मू नं स्व धा ह ॥ ॐ सर्ववित्प्र हा
 या व मि ना धू जा म ध स मू इ स्व नं स म स स्व धा ॥ गं वा य ति
 ना य स्वान ॥ ॐ सर्वविद्वज्ज नं वं य स्व धा ॥ नं व अ ॥ ध उ वा ॥ ॐ सर्व
 ॐ ता

धर्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाविहार DM 194

वि ऊं वी न रु ला य स्व धा ॥ ऊ म सि ॥ ॐ सर्वविगं वं स्व धा ॥ उ
 ॐ म्वा य म धि ना व्वा दि दा रु य क वा क्क हा पा यो थं ॥ स म य म य
 धूं म गं वि य क ॥ ऊ र ला म्म द्वा वा द न सु ति ॥ ॐ य था गं न
 धा ग गा या म नू रु ना यो सं म्म य्वा धु त था रु य वि ना म ति र्ण य
 वि ना म या मि ॥ वि धू न सर्व स क्क र्ण शा व ला व वि व ऊं र्ण धा य्वा मि
 हं न म म्मा मि शु ध्वा प्र क ति नि र्म ल ॥ स वू र्ण पू र्ण वि का र्ण सर्व रु

श्रुत्वा र्थं न शीख न ह्ययं क

अगनी विथ ॥ हा मू कृष्ण नर्स ॥ अथ त्यादि ॥ ॥ यथा विधान
धन ॥ यथा न तथ गंगा पूर्व वाधि सत्य वर्या वने निर्वृद्धा रग
वर्हिर्मा नायुत पूर्व गमत्येवः सफयु वषत्यः सफनी धाया
यथा विधान धाया का धाया पल्लव त्या दिवंग तयुष्मा जमुक
नाम धाया य पुन गगार्थत्यः तस्य पिठु या वनेः सर्व सत्वाः
संगृहीता जल जावा जना युजा वा सत्य दजावा डी यथा इकाः

वा नू पिना वा जू पिना वा संगिना वा अ संगि वा न व संगिना
वाना म संगिना वा सर्व म सत्वा मया महा मूडा मनु यद यनि
छाययि तया ॥ ३ य सं २ य म ग रु स्या दिवंग तयुष्मा गपिना
मुक ना म धाया य सुखो व त्या लोक धा रु म नू ग रु नु स्व धा
॥ ॥ शाक पु सं जल या य पे जा ॥ ३ य सं २ ने धा ना य स्वा हा ३
य म नि धा ना य स्वा हा ३ जल नि धा ना य स्वा हा ३ जल धा ला

आगी बोद ३

हं स्वधार्ता वयं समाग्रहं ॥ थ मय्यय कोडा लंख नय ॥ थ नः
आगी बोदयक मय्यय ३ ॐ ह्यदि क्कायक निमना नं दं
म ग्यय ग्वा लदा हल यं ॥ ३ ॐ नो नो नः मलु ल विमरु नया च
क ॥ द वना वं ॥ अग्नि ल मागा जि वल अ निया म पि लु ॥
व का ३ का यला स स क नां दायक पूजा रु द अ नं नयक ॥
थ नं लि धू य नं दू यक वा क ३ सा वा रु क थ नं लि क थ नं ३

शुला वा य म रु ॥ ३ ॐ सर्व विदु ज धू य स्व धा ॥ म न नं दू य
क ॥ ३ ॐ लि २ महा वल वल स र व वल कि व ल वल मा ला वि
हु ३ ॐ ध य २ दि व ग न य म पि ता ५ अ म क ना म ध य
य न स्य म ग ति मा र्ज द र्श ना य दु र्ग ति मा र्ज वि नि र्म का
य ३ ॐ ॥ म न ग रु नु स्व धा ॥ ३ ॐ सर्व विदु ज धू य स्व धा ॥ थ
न सि ज ल गा हा पा स हा म रु हा लं ख न स दू यक ॥ अ य वा

श्रीगुलीकांगक उरुनीका चक ३

पावक विधिथं धूसंलि कुगहासु विसं जयवाक्यासं साक्रीभावक
वृद्धधर्म सद्य सुखावतिलाकग्न वरु सूर्य जग्नि गंगा यथीमाना
गममाना पुनिमादिदवगा गुन धन साक्रीभावक ॥ पं ला घं सु न ॥
धन वरु सु ली आचार्य दडा हाडा वाक्यासं जऊ मानं वरु खान यावक
पूजा यागक धुडकाडा गुन वरु सत्य साक्रीभावक ॥ पं ला घं सु न ॥
धन कंगा बाधयेक धूसंलि तियाला हातिनं काय जिडि कायका डा क
महासुख लखन सं जय वाक्यासं पिछुथयक आजा रु जय रु

क पिछु

महासुख लखन सं जय वाक्यासं पिछुथयक आजा रु जय रु

विक ३ विक वपिछुनयक न श्रीगुली उरुनी हियक माय देलपास
नयक ॥ पर्व वन स्वांरुहा लरुन स्य कथं थं पिछुपूजा यागक ॥ धनको
डा मछुल थिले के स्वांनन के सकल सन किनि न सकनी मनको डा
कुगहासुन संगति वियक आचार्य दं हरिख स लख कुगहासुन
सं वियमाल ॥ जल काज पूजा हानं लखन थं पं ला घं सु न ॥
आताकन श्रीगीर्वाह मछुल विसर्जन मावक येलादि दवगा अनिया
वक पिछु अनियावक डावक सुतां हाडाडा कायला सकयक धूप

कं

द्रुयक, मगद्रुयक, सिजगाहाय, जलधुलाद्रुयक, पश्चिमससाध ३
 धेयक, वागाह, हाकद्रुयक, पंथायहापूजा, धसययक, लखनयक,
 गगाकर, जूयाक, खादि x विसर्जन वजन, विछुछाय, येजमानका
 यलारुसंचाने, धनपिछुयक, यालिहाडा संलि, गरिवलखन
 हाय, वसपाठस, वजंथिय, धनमलुलथिलक, खाननक, सम्य
 नन, माहनिछयक, वगपूजा, दकिध, निसला, कर, यहमखं
 यकपूजा २ वादी १

नासलानयक २

सा, करुजकवियक, दगुसमय, समयावक, कोला, जाहाज ॥
 धुमाननी, माकसिद्धास, लाकाकायक, प्रभादकाय, मुखसिका
 य, दानगमथ, श्रीहीवीद ॥ १०॥ ति कोलोहलपिछुक्रियाविधि ॥ १॥
 रलोकिफयागपिछुया, दकिध १२ कालायात, लाकोहन, जा
 मापिछुहलसा, द ७ कायमाल, कोलायात, गुरु ॥ ॥ ॥ ॥
 रलोयायापिछुथय, सतिकनसमासपिछुथयमाल, मथलसा, लयाकन, पिछुथय
 पूजाविधिधुसीले, मलपिछुयाखानकरयंगय, कुमविसे, सा ३ खलुकिल
 वासवाठगुकरवुकायक, वाक, अथयादि x समासपिछुयध ॥ अथोअजाशय
 पिछुसयतपूनकतयक, ५ गुरुमन, तथाअजाह, अजाह, असागलेमनयक

नासलानयक २
 नासलानयक २
 नासलानयक २

ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ

विकल

मयन

धनक

धउ

इइ

लीय

स्त्री

पूजा



पूजा

श्रीमहाराजा
श्रीमहाराज्ञी

नाजा

नाती

१ धर्षिउथयगुलाकाशना॥
२ वृद्धिपितामह, आयाआजाश
३ यविकामरु, नयाआजाश
४ पितामह, आजाश
५ सायिका, जुवूश
६ अष्टपिता, वीश्रीश
७ कनेष्टपिता, ववाश
८ जोना, दाश
९ लारु, किजाश

१ वृद्धिपितामहि, आयाजुजिमा
२ यपितामही, नायाजुमा
३ यितामही, अजिमा
४ माना, माम
५ मानासेही, मामयासां
६ वेमाना, वमाश
७ अष्टमाना, अमाश
८ कनेष्टमाना, ममाश
९ लस्वा, वना

...धन, अमादिपि ॥

सखी की या सोया पुनी

रमाह रमिनी माया के द

पुष्पाया पिबुथयन आदि मुनं देन